B. A. Part - I
Philosophy Paper - II

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

भौतिक जगत के सन्दर्भ में वस्तुवादी सिद्धान्त

सर्वप्रथम यहाँ हमें इस बात की व्याख्या कर देनी चाहिए कि वस्तुवाद क्या है। हम जानते हैं कि विश्व की वस्तुओं के अस्तित्व के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न उठाये गये हैं, यथा क्या विश्व की वस्तुएँ अपने अस्तित्व के लिए अपने ऊपर निर्भर है? क्या ये अपने अस्तित्व के लिए ज्ञाता के ऊपर निर्भर है? इत्यादि। इस प्रश्न के दो उत्तर दिए गये हैं जिनमें एक को प्रत्ययवाद के नाम से जाना जाता है, जिसकी मान्यता है कि विश्व की वस्तुओं का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। ये अपने अस्तित्व के लिए ज्ञाता के ऊपर निर्भर करते हैं। लेकिन इस ज्ञानशास्त्रीय प्रत्ययवाद के विरोध में एक दूसरा सिद्धान्त हमारे सामने आया है, जिसे वस्तुवाद के नाम से जाना जाता है। यानी वस्तुवाद वह सिद्धान्त है जो मानता है कि विश्व की वस्तुएँ ज्ञाता या देखनेवाले व्यक्ति के ऊपर निर्भर नहीं करती है; यह मानता है कि वस्तुओं का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है।

Hospers ने वस्तुवाद के दो रूपों की व्याख्या किया है जिन्हें (1) नवीन वस्तुवाद तथा (2) प्रतिनिधि वस्तुवाद के नाम से जाना जाता है।

नवीन वस्तुवाद की कुछ मान्यताएँ हैं, जो निम्न हैं —

(1) भौतिक वस्तुओं की एक अस्तित्ववान दुनिया है। इस दुनिया में पौधे, पहाड़ जैसी वस्तुएँ हैं।

(2) इन वस्तुओं के सन्दर्भ में कहे गये कथन इन्द्रियानुभूति के आधार पर जाने जा सकते हैं।

(3) ये वस्तुएँ अपने-आप में स्वतन्त्र हैं, जो देखनेवाले के ऊपर निर्भर नहीं करते।

Scanned with CamScanner

(4) इस भौतिक जगत को इन्द्रियों के आधार पर देखा जाता है। इन वस्तुओं के ज्ञान का दावा हम कर सकते हैं।

(5) भौतिक वस्तुओं के सम्बन्ध में जो हमारी इन्द्रियानुभूतियाँ हैं उनकी उत्पत्ति स्वयं भौतिक वस्तुओं के द्वारा होती है। उदाहरण के लिए कुर्सी की अनुभूति कुर्सी द्वारा ही उत्पन्न होती है।

Hospers का विचार है कि हर नवीन वस्तुवादी इस मान्यता को स्वीकारता है, लेकिन ये मान्यताएँ भी शंका का विषय बन जाती हैं। अब हम इस बात की विवेचना करेंगे कि Hospers के अनुसार इनके ऊपर शंका करने का क्या कारण है?

ऐसा कहा गया है कि क्या यह सत्य नहीं है कि जो भी हम देखते हैं वह आंशिक रूप से भी हमारी इन्द्रियों पर निर्भर करनेवाला है? यदि हमारी आँखे दूसरे तरह की होती तब हम जो भी देखते वह दूसरे तरह का दिखता। उसी तरह स्वाद की इन्द्रियाँ यदि दूसरे तरह की होती तब हमारे स्वाद भी दूसरे तरह के होते। इसलिए प्रश्न यह है कि यह कहने का क्या आधार है कि हम वस्तुओं को वैसी ही देखते हैं जैसी कि वे रहती है? मान लिया जाए कि हमारी दोनों आँखें एक ही तरह की नहीं देखती तब हम हर वस्तु को दो देखते या मान लिया जाय कि हमारी हजार आँखें होती तब यह जगत भी हमें भिन्न प्रकार का दिखाई देता। उसी तरह की बात हमारे सुनने, गंध लेने, स्वाद लेने और स्पर्श करने के सम्बन्ध में होती। अब यदि वस्तु जिसे हम देखते हैं उसमें भिन्नता हमारे देखनेवाली इन्द्रिय पर निर्भर करती है, तब यह कहने में क्या हर्ज है कि वस्तुएँ आंशिक रूप से भी हमारे देखने पर निर्भर करती है।

कभी-कभी वस्तुएँ हमें अपने सही स्वरूप से अलग ढंग की दिख पड़ती है इसे भ्रम कहा जाता है। उदाहरण के लिए एक सीधी छड़ी पानी में डूबे रहने की अवस्था में टेढ़ी नजर आती है, जबकि वह सीधी रहती है। उसी प्रकार दूर पर्वत पर

को हरा पौधा भूरा नजर आता है। बर्तन में रखा हुआ पानी एक व्यक्ति को ठंडा लगता है जबकि वही दूसरे को गर्म लगता है। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष में हमें धोखा होता है और ऐसी हालत में यह दावा करना कि जो चीज रहती है, हम उसे उसी रूप में देखते हैं, सही प्रतीत नहीं होता।

पुनः एक ऐसी स्थिति भी होती है जिसमें हम किसी स्थान विशेष पर वैसी वस्तु को देख लेते हैं जो कि वास्तव में उस स्थान विशेष पर नहीं होती है। इस स्थिति को विभ्रम की स्थिति कही जाती है। उदाहरण के लिए एक शराबी जो शराब के नशे में चूर है, वह दीवार पर गुलाबी चूहे को ऊपर चढ़ते और नीचे उतरते देखता है यद्यपि कि वहाँ कोई गुलाबी चूहा नहीं है। इसी प्रकार यदि हम किसी का इन्तजार कर रहे हैं और इन्तजार में ज्यादा आतुर हो जाते हैं तब हमको बार-बार ऐसा लगता है कि कोई दरवाजा खटखटा रहा है, जबकि ऐसा नहीं होता। इस तरह हम वैसी चीज को देखते हैं जो वहाँ नहीं है यही विभ्रम है।

इन बातों के आधार पर Hoskeis यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि नवीन वस्तुवाद की मान्यताएँ शंका के विषय हैं। इन्हें सहज रूप से स्वीकारा नहीं जा सकता है।

प्रतिनिधि वस्तुवाद —

अब हम वस्तुवाद के एक दूसरे रूप की व्याख्या करेंगे जिसे प्रतिनिधि वस्तुवाद के नाम से जाना जाता है। इसके प्रवर्तक लॉक माने जाते हैं। इनका विचार है कि भौतिक वस्तुएँ प्रत्यक्ष से स्वतन्त्र रूपेण अस्तित्ववान हैं। लेकिन ये वस्तुएँ जैसी हमें दिखती है, उसमें और वस्तुएँ जैसी है, में भिन्नता है।

भौतिक वस्तुओं में कई तरह के गुण होते हैं लेकिन ये गुण एक प्रकार के नहीं हैं। उन्होंने गुणों को मौलिक तथा गौण गुणों के वर्ग में विभक्त किया है। वस्तु के प्रधान गुण वे हैं जो वस्तु में रहते हैं और जो हमारी प्रत्यक्ष से स्वतन्त्र हैं।

Scanned with CamScanner

वस्तु के ये गुण हमारे देखने के ऊपर निर्भर नहीं करते। उदाहरण के लिए एक वस्तु का आकार, उसका भार आदि। लेकिन वस्तु के कुछ गौण गुण भी होते हैं जैसे उसका रंग, गंध, स्वाद आदि। ये गुण सिर्फ वस्तु के ही ऊपर निर्भर नहीं करते। जैसे एक ही वस्तु का रंग भिन्न-भिन्न प्रकाश में भिन्न तो दिखता ही है साथ ही यह भिन्न द्रष्टा के द्वारा भी देखा जाता है। एक व्यक्ति जो पीलिया रोग से ग्रसित है उसे वस्तु पीली दिखलाई पड़ती है, इसी तरह की बात वस्तु के गन्ध, स्वाद जैसे गुणों के साथ भी लागू होती है।

यहाँ Locke (लॉक) का कहना है कि रंग, गन्ध, स्वाद आदि ऐसे गुण हैं जो वस्तु में निहित नहीं होते। ये ऐसे प्रत्यय हैं जिसकी उत्पत्ति वस्तु के गुणों द्वारा होती है। Locke के अनुसार एक गौण गुण वस्तुतः एक वस्तु का गुण नहीं होता। एक वस्तु स्वतः किसी रंग की नहीं होती बल्कि उसमें एक शक्ति होती है जिसके द्वारा देखनेवालों में एक विशेष प्रकार की इन्द्रियानुभूति उत्पन्न करती है। इस दृष्टिकोण से गौण गुणों के द्वारा उत्पन्न अनुभूतियाँ वस्तुओं के मौलिक गुण नहीं होते।

अब यहाँ प्रश्न उठता है कि वस्तु के प्रधान गुण और उनके गौण गुणों के बीच क्या सम्बन्ध है। Locke का विचार है कि इन दोनों के बीच सम्बन्ध समानता का है। एक वस्तु जो वास्तव में चौकोर है वह चौकोर दिखती भी है तथा दूसरी वस्तु जो गोल है, देखने में भी गोल लगती है।

Hospers का विचार है कि Locke का विचार कि वस्तु अपने प्रधान एवं गौण गुणों के ऊपर निर्भर करता है, Berkeley का कहना है कि प्रधान एवं गौण गुणों के बीच अन्तर का कोई स्पष्ट आधार नहीं है। Berkeley का तर्क है कि गौण और प्रधान गुण के बीच अभिन्न सम्बन्ध है। यदि वस्तु में एक तरह के गुण नहीं है तो दूसरे तरह का गुण भी नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए एक वस्तु के रंग

तथा उसके आकार में अभिन्न सम्बन्ध है। एक वस्तु के रंग के विषय में बिना उसके आकार के नहीं सोचा जा सकता है। अतः Locke के द्वारा किया गया यह अन्तर स्पष्ट नहीं है।

पुनः Locke का यह विचार कि गौण गुण भिन्न-भिन्न स्थितियों में भिन्न-भिन्न दिखलायी पड़ता है जबकि प्रधान गुणों में ऐसी भिन्नता नहीं होती, गलत है। इसका कारण यह है कि इस तरह की बात न केवल रंग और गन्ध के साथ सत्य है बल्कि उसके आकार, रूप तथा दूसरे प्रधान गुणों के साथ भी सत्य है। एक वस्तु भिन्न-भिन्न कोणों से देखने पर भिन्न-भिन्न लगती है। इस प्रकार जिस तरह गौण गुण परिवर्तनशील है उसी प्रकार प्रधान गुण में भी इस तरह की विशेषता है। इसलिए प्रधान गुण और गौण गुण में कोई भिन्नता नहीं है।

पुनः Locke का विचार है कि प्रधान गुण और गौण गुण के बीच समानता का सम्बन्ध है। लेकिन गौण गुण वस्तु के किसी गुण के समान नहीं है, कारण कि इस तरह का गुण वस्तु में नहीं पाया जाता। लेकिन प्रश्न है कि हम कैसे जानते हैं कि प्रधान गुणों की अनुभूति वस्तु के गुणों के समान है। ऐसा तभी सम्भव है, जबकि दोनों चीजों को हम समान रूप से देख सके। हमें जो भी अनुभूति होती है वह अनुभूति वस्तु के गुणों की होती है और इसी आधार पर हम वस्तु के विषय में ज्ञान हासिल करते हैं। अब यदि वस्तु और उसके गुण समान रूप से हमारे समक्ष नहीं होते तब उन दोनों के बीच तुलना कैसे की जा सकती है?
अतः Locke का प्रतिनिधि वस्तुवाद का विचार संगत प्रतीत नहीं होता।

अतः निष्कर्षतः Hospers का विचार है कि वस्तुवाद का विचार आत्मव्याघाती है और हमें फिर Berkeley के प्रत्ययवाद की ओर मुड़ना पड़ेगा।

X←——————X